संतोष पटेल की कविताएं

शिक्षा: एम ए (अंग्रेजी, हिंदी भोजुपरी, ट्रांसलेशन स्टडीज और बुद्धिस्ट स्टडीज), एमफिल (अंग्रेजी) पीएच-डी (हिंदी)**संपादक :** भोजपुरी जिन्दगी, डिफेंडर। **सम्प्रति :** असिस्टेंट रजिस्ट्रार(सतर्कता) दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय, दिल्ली सरकार, नई दिल्ली। **प्रकाशन :**हिंदी और भोजपुरी साहित्य में कविता व आलोचना में हस्ताक्षेप, **संपादन :** समकालीन दलित कविता (भोजपुरी काव्य संग्रह) पता-आर जेड एच 940 राजनगर -2 पालम कॉलोनी नई दिल्ली-110077
संपर्क 9868152874 bhojpurijinigi@gmail.com

आत्म-विच्छेदन

1

कुछ लोग काट देते है उपनाम
अपने नाम के पीछे से
ताकि जगजाहिर कर सके कि
वे हो गए जातिविहीन
'डीकास्ट'
लेकिन उपनाम काट देने की प्रक्रिया
वैसी ही होती है
जैसे छिपकली द्वारा पूंछ त्याग देने की
लेकिन सबको पता है
आ जाती है छिपकली की पूंछ फिर से
वैसे है उनके नाम के पीछे का उपनाम
जुड़ जाता है समय के बदलते

तमाम तरह के जातीय दंभ से
भेदभाव से।
बिहार को ऐसे कोसता है
मानो बिहार के अलावा और कहीं
नहीं है जातिवाद
फिर दुखी मन से कहता है वह
वहां से कभी जाति जा ही नहीं
सकती।
जबकि सत्य यह है कि उसके
नस नस में
रग रग में
दौड़ता है
जातीय भेदभाव का खून
दिमाग में बड़े होने का फितूर
बिहार से बाहर रहने पर भी
उसके अंदर का कीड़ा मरा नहीं है
समय पाते ही वह छिपकली की पूंछ
तरह
जोड़ लेगा अपना उपनाम।

बाबा साहेब के नए दिवाने

नए दिवाने हटा देते हैं
बाबा साहेब की तस्वीर
अपने कार्यालय की दीवारों से
और विद्यालयों के कक्षाओं से
और लगा देते हैं तस्वीर
अपने देवतुल्य नेताओं की ।

नए दिवाने नहीं लगने देते
बाबा साहेब की मूर्तियां
न्यायालयों के प्रांगण में
करते हैं जबरदस्त विरोध
इस बात को लेकर देश भर में।

नए दिवाने तो बाबा साहेब को
खारिज करने में लगे रहते हैं दिन रात
कहते हैं नहीं वे संविधान निर्माता
हर रोज लाते एक नए चेहरे को
घोषित करते हैं यही है असली
इन्होंने ही लिखा था संविधान।

नए दिवाने पीट रहे हैं छाती आजकल
जैसे उनको लग गया हो गौ हत्या का दोष
तब जब किसी समर्थक ने
लालू प्रसाद के पैरों के सामने
रख दिया बाबा साहेब की तस्वीर
दिवाने भीतर तक आहत हैं
आहत में मीडिया के सारे एंकर हैं

इसी बात को लेकर
बस क्या था नए दीवाने
रूदाली बने हुए हैं जैसे
इनके इष्ट देव के सम्मान में कुछ कमी हो गई हो
तब जब बाबा साहेब के समस्त संस्थाओं में
आजकल होती हैं तमाम बातें
छोड़कर बाबा साहेब के सिद्धांतों को।
सच तो यह है कि
ये नए दिवाने ना कभी
बाबा साहब के थे
ना होंगें
क्योंकि बाबा साहेब के समानता के सिद्धांत को
समरता में बदलने में लगे हुए हैं ये देश के
आजादी के बाद से।

अमीबा !

अमीबा!
तू कहां नहीं पाया जाता
नदी, तालाब, पोखर में
मीठे जल की झील में और खोखर में
पानी के गढ्ढे में और खाई में
गीली मिट्टी और गीली हरी काई में।
अमीबा !
तू जन्मजात है परजीवी
आत्मकेंद्रित, महीन आत्मजीवी
संवेदनहीन, हृदयहीन और रंगहीन
जिस रंग में ढलना चाहते हो
ढल ही जाते हो
क्या दाहिना, क्या बायां
मिलते अपना निवाला
सीधा निगल जाते हो।
अमीबा !
साबित हो गया कि
ऊर्ध्व गमन में तुम हो माहिर
खेल करते हो जैसे हो कोई साहिर
तू रोगकारी और विकारी
भरी है तुझमें केवल मक्कारी
इतनी बेशर्मी के बावजूद
अपने को बना रखे हो देवता'
'प्रोटियस ग्रीक शब्द है जो अमीबा से जुड़ा है
जिसका अर्थ है समुद्री देवता।